राहगीरों को घायल कर रहीं राजधानी की 50% सड़कें

बदलहाल सड़कों से रोज गुजरते हैं जिम्मेदार, फिर भी नहीं दिखते जानलेवा गड्ढे

प्रांजुल पांडेय

भोपाल, 14 सितम्बर. राजधानी में बारिश ने सड़कों की बदहाली का आंकड़ा एक बार फिर सामने ला दिया है. नगर निगम के पास करीब 3,500 किलोमीटर सड़क नेटवर्क है, जबकि करीब 550 किलोमीटर सड़कें पीडब्ल्यूडी के अधीन हैं. मानसून के दौरान दोनों एजेंसियों के अधीन आने वाली कई सड़कों पर गड्ढे, उखड़ा डामर और जलभराव की समस्या सामने आई है.

सबसे बड़ा आंकड़ा शहर की आंतरिक सड़कों का है. करीब 1,500 किलोमीटर आंतरिक सड़कें और सर्विस लेन खराब हालत में हैं. यानी केवल नगर निगम के करीब 3,500 किमी नेटवर्क को आधार मानें तो लगभग 43 फीसदी सड़क नेटवर्क खराब स्थिति से प्रभावित है. यह हिस्सा करीब पूरे 550 किमी पीडब्ल्यूडी नेटवर्क का 2.7 गुना है.

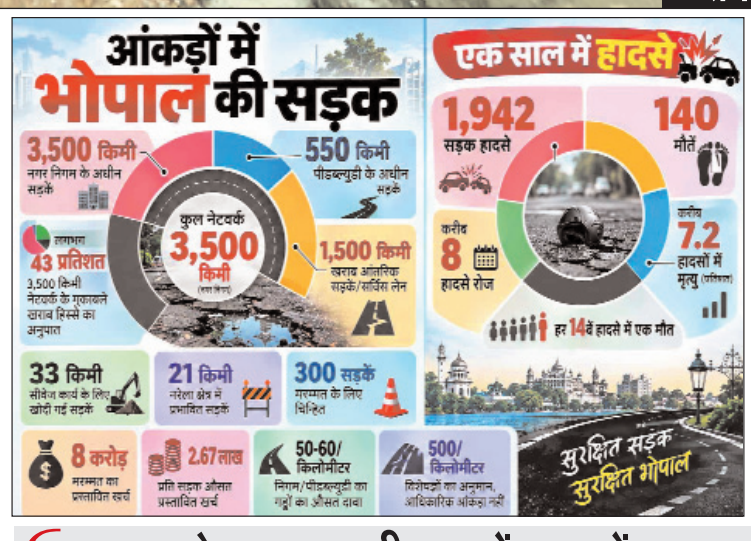

गड्ढों की वास्तविक संख्या को लेकर भी स्थिति स्पष्ट नहीं है. विशेषज्ञों ने सड़क नेटवर्क पर करीब 500 गड्ढे प्रति किलोमीटर तक होने का अनुमान जताया. वहीं नगर निगम और पीडब्ल्यूडी की ओर से औसतन 50 से 60 गड्ढे प्रति किलोमीटर बताए गए हैं.

भोपाल शहर की सड़कों पर गड्ढों का जाल

मानसून के बाद भोपाल शहर की कई प्रमुख और अंदरूनी सड़कों की हालत खराब हो गई है। करोंद, छोला, भानपुर, गांधी नगर, अशोका गार्डन, प्रभात चौराहा, जेके रोड, रायसेन रोड, कोलार रोड और पुराने शहर के कई हिस्सों में सड़क पर जगह-जगह गड्ढे दिखाई दे रहे हैं। कई स्थानों पर डामर की परत उखड़ चुकी है और सड़क पर बड़े-बड़े गड्ढे बन गए हैं। बारिश के बाद इनमें पानी भरने से वाहन चालकों को गड्ढों की गहराई का अंदाजा नहीं लग पाता। इससे दोपहिया वाहन चालकों के दुर्घटनाग्रस्त होने का खतरा बढ़ गया है। खासकर रात के समय स्थिति और गंभीर हो जाती है.

गड्ढों वाली सड़कों पर दौड़ रही मौत

बारिश के बाद शहर की बदहाल सड़कें और जगह-जगह बने गड्ढे वाहन चालकों के लिए जानलेवा साबित हो रहे हैं. भोपाल में पिछले एक साल में 1,942 सड़क हादसे दर्ज किए गए, जिनमें 140 लोगों की मौत हुई. आंकड़ों के अनुसार औसतन हर दिन करीब 8 हादसे हुए और करीब हर 14वें हादसे में एक व्यक्ति की जान गई. खराब सड़कों पर बने गड्ढों में बारिश का पानी भरने से उनकी गहराई का अंदाजा नहीं लग पाता. गड्ढों से दोपहिया वाहन चालक संतुलन खो देते हैं. कई जगह सड़क की ऊपरी परत उखड़ने, किनारों के टूटने और निर्माण के बाद ठीक से मरम्मत नहीं होने से भी वाहन चालकों को परेशानी हो रही है. रात के समय पर्याप्त रोशनी नहीं होने से खतरा और बढ़ जाता है. हादसों के आंकड़े बताते हैं कि सड़क सुरक्षा केवल यातायात नियमों के पालन तक सीमित नहीं है. सड़क की गुणवत्ता, गड्ढों की समय पर मरम्मत और खतरनाक हिस्सों की पहचान भी उतनी ही जरूरी है. खासकर बारिश के बाद सड़कों की स्थिति की नियमित जांच नहीं होने से छोटे गड्ढे बड़े खतरे में बदल रहे हैं.

33 किमी सड़कें खुदाई से प्रभावित

शहर में सड़क खराब होने की एक दूसरी बड़ी वजह निर्माण और सीवेज के काम हैं. जून में करीब 33 किलोमीटर सड़कें सीवेज कार्य के लिए खोदे जाने की जानकारी सामने आई थी. इनमें नरेला क्षेत्र में करीब 21 किलोमीटर, यानी कुल प्रभावित लंबाई का लगभग 64 फीसदी, सड़कें शामिल थीं .इसका असर यह है कि एक तरफ बारिश से पुरानी सड़कें टूट रही हैं और दूसरी तरफ निर्माण कार्यों के कारण नई सड़कें भी लंबे समय तक बाधित रह रही हैं. कई जगह सड़क की खुदाई, जलभराव और गड्ढे एक साथ वाहन चालकों की परेशानी बढ़ा रहे हैं. भोपाल में हर मानसून के बाद सड़क मरम्मत पर पैसा खर्च होता है, लेकिन सवाल स्थायी समाधान का है. यदि 3,500 किलोमीटर के सड़क नेटवर्क में हर साल बड़ी मात्रा में सड़कें दोबारा खराब होती हैं, तो निगरानी, निर्माण गुणवत्ता, जल निकासी और ठेकेदारों की जवाबदेही पर अलग से सार्वजनिक आंकड़े जारी करने की जरूरत है.

हादसों की पीड़ा

हमीदिया ट्रॉमा सेंटर में जिंदगी की जंग लड़ रहें पीड़ित

परिजन सुरेश ने बताया कि राकेश बाइक से नर्मदापुरम जा रहे थे. सड़क पर बने गड्ढे से बचने की कोशिश में बाइक अनियंत्रित होकर गिर गई. हादसे में सिर और शरीर के अन्य हिस्सों में गंभीर चोट आई. गंभीर हालत में हमीदिया ट्रॉमा सेंटर रेफर किया गया. परिजन ने कहा, सड़क की हालत ठीक होती तो शायद यह हादसा नहीं होता.

टूटी सड़क पर फिसली बाइक, परिवार की बढ़ी चिंता

मरीज के परिजन अनुराग ने बताया कि हादसा डिपो चौराहा पर हुआ. सड़क पर गड्ढे और खराब सतह के कारण बाइक का संतुलन बिगड़ा और अवरिल सड़क पर गिर गए. उन्हें गंभीर चोटें आईं. परिजन के मुताबिक डॉक्टर इलाज कर रहे हैं और उनकी हालत पर लगातार नजर रखी जा रही है.

गड्ढे से बचने में बिगड़ा संतुलन, ट्रॉमा सेंटर पहुंचे

परिजन चेतन के अनुसार रोशन कोलार रोड से गुजर रहे थे. सड़क पर गड्ढा होने से वाहन का संतुलन बिगड़ गया और दुर्घटना हो गई. चोट गंभीर होने के कारण उन्हें हमीदिया ट्रॉमा सेंटर लाया गया.परिजन ने कहा कि इलाके की सड़क लंबे समय से खराब है और कई वाहन चालक यहां हादसे का शिकार हो चुके हैं.

इनका कहना है...

बारिश के कारण शहर की कुछ सड़कों पर गड्ढे की समस्या सामने आई है. नगर निगम की टीमों को ऐसे स्थानों को चिह्नित कर तत्काल गड्ढे भरने और क्षतिग्रस्त हिस्सों की मरम्मत के निर्देश दिए गए हैं. सड़क निर्माण में गुणवत्ता से समझौता नहीं होगा और लापरवाही पर कार्रवाई की जाएगी.

- मालती राय, महापौर

सड़कों की गुणवत्ता की जांच नहीं होने से स्थिति लगातार बिगड़ रही है. कई सड़कें तय समय से पहले ही उखड़ने लगती हैं. निर्माण कार्यों में गुणवत्ता मानकों की सख्ती से निगरानी जरूरी है. घटिया निर्माण के लिए जिम्मेदार ठेकेदारों पर कार्रवाई होनी चाहिए, ताकि सरकारी राशि खर्च होने के बाद सड़कें जल्द खराब न हों.

- विभा पटेल, पूर्व महापौर

7500 मेधावी विद्यार्थियों को मिलेगी ई-स्कूटी

19 को होगा राज्य स्तरीय स्कूटी वितरण कार्यक्रम

प्रशासनिक संवाददाता

भोपाल, 14 सितंबर. प्रदेश के शासकीय हायर सेकंडरी स्कूलों में कक्षा 12वीं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों को एक बड़ी सौगात मिलने जा रही है. मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव मुख्यमंत्री स्कूटी योजना के तहत19 सितंबर को भोपाल से मेधावी विद्यार्थियों को ई-स्कूटी का वितरण करेंगे.

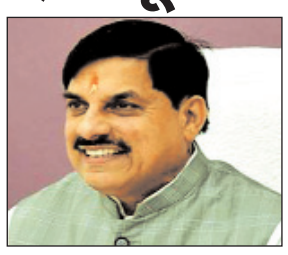

राज्य स्तरीय स्कूटी वितरण कार्यक्रम शासकीय सुभाष उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय शिवाजी नगर, भोपाल में सुबह 10 बजे से होगा. योजना के तहत प्रदेश में 7500 मेधावी विद्यार्थियों को स्कूटी मिलेगी. मुख्यमंत्री स्कूटी योजना का उद्देश्य स्कूली विद्यार्थियों को शैक्षणिक उपलब्धियां हासिल करने के लिए प्रोत्साहित करना है. योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को कक्षा 12वीं में प्रथम प्रयास में ही 70 फीसदी अंक के साथ स्कूल में प्रथम स्थान आना जरूरी हैं. प्रदेश सरकार द्वारा चलाई जा रही इस योजना का लाभ स्कूल शिक्षा एवं जनजातीय कार्य विभाग के शासकीय हायर सेकंडरी स्कूलों में नियमित विद्यार्थी के रूप में अध्ययनरत विद्यार्थी को दिया जाता है. योजना में सभी संकायों के विद्यार्थियों को शामिल किया गया है. योजना के तहत शिक्षण सत्र 2025-26 के लिए प्रदेश के 7,500 से अधिक पात्र विद्यार्थियों को ई-स्कूटी का लाभ मिलेगा.

एमएसपी पर धान, ज्वार, बाजरा उपार्जन के लिए पंजीयन आज से

भोपाल. खरीफ विपणन वर्ष 2026-27 में समर्थन मूल्य पर धान, ज्वार एवं बाजरा उपार्जन के लिये किसान पंजीयन प्रक्रिया का निर्धारण कर दिया गया है. किसान 10 अक्टूबर तक पंजीयन करा सकते हैं. पंजीयन 15 सितम्बर से शुरू हो रहा है. खाद्य, नागरिक आपूर्ति एवं उपभोक्ता संरक्षण मंत्री गोविंद सिंह राजपूत ने किसानों से आग्रह किया है कि निर्धारित समय में पंजीयन करा लें, जिससे किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं हो. उन्होंने बताया है कि किसान पंजीयन की व्यवस्था को सहज और सुगम बनाया गया है. प्रदेश में 1100 से अधिक पंजीयन केन्द्र बनाये गये हैं. पंजीयन की नि:शुल्क व्यवस्था ग्राम पंचायत और जनपद पंचायत एवं तहसील कार्यालयों में स्थापित सुविधा केन्द्र पर और सहकारी समितियों एवं सहकारी विपणन संस्थाओं द्वारा संचालित पंजीयन केन्द्र पर की गई है.

राजभाषा पखवाड़ा का शुभारंभ

26 सितंबर तक होंगे विभिन्न कार्यक्रम

नवभारत रिपोर्टर

भोपाल, 14 सितंबर. पमरे भोपाल मंडल में सोमवार से 26 सितंबर तक राजभाषा पखवाड़ा-2026 का आयोजन किया जा रहा है. राजभाषा पखवाड़े का शुभारंभ 14 सितंबर मंडल रेल प्रबंधक पंकज त्यागी द्वारा किया गया.

इस अवसर पर वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी विजय सिंह, राजभाषा अधिकारी वृजेन्द्र कुमार सहित अन्य शाखा अधिकारीगण एवं कर्मचारी उपस्थित रहे. कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर मंडल रेल प्रबंधक पंकज त्यागी ने कहा कि हिंदी हमारे देश की व्यापक संपर्क भाषा है तथा भारतीय रेल जैसे विशाल संगठन में आमजन से सहज एवं प्रभावी संवाद स्थापित करने में राजभाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका है. उन्होंने अधिकारियों एवं कर्मचारियों से कार्यालयीन कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करने तथा राजभाषा के प्रचार-प्रसार में सक्रिय योगदान देने की अपील की. भोपाल मंडल द्वारा राजभाषा के प्रति जागरूकता बढ़ाने तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से पखवाड़े के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं, परिचर्चाओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा.

डीआरएम ने 8 रेलकर्मियों का किया सम्मान

सतर्कता एवं त्वरित कार्रवाई से रेल दुर्घटनाओं को टाला

नवभारत रिपोर्टर

भोपाल, 14 सितंबर. रेल परिचालन में संरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए भोपाल मंडल के विभिन्न स्टेशनों एवं कार्यस्थलों पर कार्यरत रेलकर्मियों द्वारा ड्यूटी के दौरान दिखाई गई सतर्कता एवं त्वरित कार्रवाई के अनेक उदाहरण सामने आए हैं.

इन रेलकर्मियों ने ट्रेनों एवं रेल परिसंपत्तियों में उत्पन्न संभावित खतरों को समय रहते पहचानकर संबंधित अधिकारियों को सूचना दी तथा आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित कर सुरक्षित रेल परिचालन में महत्वपूर्ण योगदान दिया. डीआरएम पंकज त्यागी ने संभावित रेल दुर्घटनाओं को टालने वाले 8 रेलकर्मियों को संरक्षा पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया.

संभावित रेल दुर्घटनाओं को टालने वाले कर्मचारियों में मंगलदीन कुशवाहा, कांटेवाला, सलामतपुर ने 15 जुलाई 2026 को सलामतपुर स्टेशन से थ्रू पास हो रही मालगाड़ी के दौरान संकेतों का आदान-प्रदान करते समय इंजन से संबंधित असामान्य स्थिति को देखा. उन्होंने खतरे को भांपते हुए तत्काल हाथ संकेत देकर गाड़ी को रुकवाया. जांच करने पर ब्रेक ब्लॉक जाम पाया गया, जिससे समय रहते आवश्यक कार्रवाई संभव हो सकी.

जोधपुर-चेन्नई के बीच चलेगी पूजा स्पेशल ट्रेन

भोपाल, 14 सितंबर. यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए रेल प्रशासन ने गाड़ी संख्या 04815/04816 जोधपुर-चेन्नई-जोधपुर साप्ताहिक पूजा स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया है. यह विशेष ट्रेन जोधपुर से 9 फेरे तथा चेन्नई से 9 फेरे चलेगी. सीनियर डीसीएम सौरभ कटारिया ने बताया कि यात्रियों की सुविधा एवं अतिरिक्त यात्री भीड़ को ध्यान में रखते हुए यह साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन संचालित की जा रही है. इस ट्रेन के संचालन से मध्यप्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, तेलंगाना, आंध्रप्रदेश एवं तमिलनाडु के बीच यात्रा करने वाले यात्रियों को अतिरिक्त रेल सुविधा उपलब्ध होगी. यात्रियों से अनुरोध है कि वे इस अतिरिक्त रेल सेवा का लाभ उठाएं। यात्री इस स्पेशल ट्रेन की विस्तृत जानकारी स्टेशन, रेल मदद 139, रेलवन एप

राष्ट्रीय इंजीनियरिंग दिवस विशेष | 45% को तुरंत जॉब, 40% छोड़ रहे स्ट्रीम, 7% स्टार्टअप में बढ़ा रहे करियर

गैर इंजीनियरिंग क्षेत्र में बना रहे करियर

15 लाख इंजीनियर हर साल तैयार

साक्षी केसरवानी

भोपाल, 14 सितंबर. देश में हर साल 12 से 15 लाख विद्यार्थी इंजीनियरिंग की पढ़ाई पूरी करते हैं. लेकिन इन विद्यार्थियों में कुल 50 प्रतिशत ही ऐसे हैं, जो इंजीनियरिंग के ही क्षेत्र में अपना भविष्य आगे बढ़ाते हैं.

केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की रिपोर्ट ऑल इंडिया सर्वे ऑन हायर एजुकेशन और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (एआईसीटीई) के अनुसार पासआउट होने वाले कुल छात्रों में से करीब 45 से 50 प्रतिशत को ही शुरुआती चरण में आईटी सेक्टर या कोर इंजीनियरिंग स्ट्रीम में सीधी नौकरियां मिल पाती हैं. ऐसे में करीब 35 से 40 प्रतिशत इंजीनियर्स अपनी कोर ब्रांच छोड़कर सिविल सर्विसेज, बैंकिंग, डिजिटल मार्केटिंग, मीडिया, डेटा एनालिटिक्स और मैनेजमेंट या अन्य नॉन-टेक्निकल क्षेत्रों में करियर बना रहे हैं.

नैसकॉम और स्टार्टअप इंडिया के अनुसार, करीब 5 से 7 प्रतिशत युवा पढ़ाई पूरी करने या कुछ साल के अनुभव के बाद खुद का स्टार्टअप शुरू करते हैं. हालांकि शेष 8 से 10 प्रतिशत विद्यार्थी आगे की पढ़ाई या रिसर्च के लिए भारत और विदेशों के संस्थानों में रुख भी करते हैं. रिपोर्ट के अनुसार देश और मध्य प्रदेश में छात्रों की पहली पसंद आज भी बी.ए. बी.एस.सी, बी.कॉम है. जिसके बाद इंजीनियरिंग करने वाले कुल विद्यार्थियों का प्रतिशत देश भर में 11.8 और मप्र में 16.5 है.

इलेक्ट्रिक व्हीकल से ईसीई का लौट रहा दौर

विशेषज्ञों के अनुसार इंजीनियरिंग क्षेत्र में कंप्यूटर साइंस (सीएसई) और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग की 95% से ज्यादा सीटें भरती हैं. लेकिन वर्तमान में 5जी और इलेक्ट्रिक व्हीकल के आने के बाद कंपनियों में इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्यूनिकेशन (ईसीई) के विद्यार्थियों की मांग वापस बढ़ी है, जिससे अब नए विद्यार्थी भी इस क्षेत्र में फिर से रुचि लेकर दाखिला ले रहे हैं.

कोर फील्ड में बने रहने को क्या करें छात्र

विद्यार्थियों को कोर सेक्टर में रहने के लिए गेट या पीएसयू जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी दूसरे-तीसरे साल से शुरू कर दें। केवल डिग्री पर निर्भर न रहें, इंडस्ट्री-ओरिएंटेड शॉर्ट टर्म कोर्स (जैसे ऑटो कैड, एंबेडेड सिस्टम, पीएलसी/स्काडा या एआई-डाटा साइंस) सीखें और अच्छी इंटर्नशिप करें, जो नौकरी मिलने में सहायक होंगें.

12 वीं बाद किस कोर्स में कितना प्रवेश

कोर्स	देश में प्रतिशत	मप्र में प्रतिशत
बी.ए.	34.2%	38%
बी.एस.सी.	14.8%	21%
बी.कॉम.	13.7%	19%
इंजीनियरिंग	11.8%	16.5%
अन्य(मेडिकल,लॉ,बीबीए)	25.5%	5.5%

कम पैकेज और रुचि न होने से बदल रहे स्ट्रीम

विद्यार्थी इंजीनियरिंग में दाखिला ले लेते हैं. लेकिन उन्हें ये नहीं पता होता कि उनकी रुचि किसमें है. कोर इंजीनियरिंग (जैसे सिविल, मैकेनिकल, इलेक्ट्रिकल) में शुरुआती सैलरी पैकेज 2.5 से 6 लाख रुपये सालाना होता है. जिससे विद्यार्थी हाई पैकेज (6 से 10 लाख) वाले आईटी, सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट और डेटा एनालिटिक्स में करियर को आगे बढ़ाते हैं. वहीं कई विद्यार्थियों को प्रैक्टिकल स्किल्स न होने के कारण उन्हें नौकरी नहीं मिलती, जिससे वो अन्य क्षेत्रों की तरफ बढ़ते हैं. **डॉ. शैलेन्द्र जैन,** एकेडमिक डीन, मैनिट भोपाल

42 जिलों में बारिश के बाद भी एमपी में 6% पानी कम

आखिरी दौर में बदला बारिश का हिसाब

नवभारत न्यूज

भोपाल, 14 सितम्बर. मध्यप्रदेश में मानसून के आखिरी दौर में बारिश ने एक बार फिर जोर पकड़ा है, लेकिन इसका असर पूरे प्रदेश में एक जैसा नहीं है. 24 घंटे में 42 जिलों में बारिश हुई. राजगढ़ के खिलचीपुर में 124.6 मिमी यानी करीब 5 इंच बारिश के साथ अति भारी बारिश हुई. इसके बावजूद प्रदेश में इस सीजन की कुल बारिश 834.4 मिमी यानि 32.85 इंच है, जबकि सामान्य आंकड़ा 886.6 मिमी यानि 34.90 इंच है. यानी सीजन में अब भी 6% बारिश कम है. इस तरह इस बार की बारिश का सबसे बड़ा बदलाव यह है कि कई जिलों में तेज बारिश के बावजूद प्रदेश का कुल घाटा अभी पूरा नहीं हुआ है.

बीते 24 घंटे में बड़वानी के अंजड़ में 108 मिमी, झाबुआ में 86.1 मिमी, जबोट में 80.2 मिमी, गौतमपूरा में 70.6 मिमी, सनावद